शादी-ब्याह के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीत...

विनायक

गढ़ रणत भवन से आवो विनायक करो ए नचीती बिड़दड़ी।

बिड़द बिनायक दोंनुजी आया आय पवास्यां सिल बड़ तलै॥

बूझत-बूझत नगर पवास्यां पोल बताओ दशरथराय की।

ऊँची सी मेडी लाल किंवाड़ी कैलाज भर राजीड़ार बारन॥

पैतो तो बासो सरवर बसियो सरवर भसीयो ठण्ड़ा निर जूँ।

दूजो तो बासो बाड़ी जी बसियो बाड़ी मे भरीयो बिझोबस।

फल-फूल बाड़ी सुपल कलिया कुंजासी मरवा के बड़ा।

अगणो तो बासो बड़तल बसियो बड़ नारेलारी छईजुँ॥

चोथो तो बासो नगरी जी बसीयो नगरी में बैठया बामण बाणीया।

पंचवो तो बासो तोरण बसियो तोरण छाई रुड़ी चिड़कली॥

एवड़ छवड़ सात चिड़कली बीच हरियाली सूवटो।

व तो चुग-चुग बोल सात चिड़कली अमृत बोल हरियो सूवटो॥

छटो तो बासो फेंरा जी बसियो फेरा में बैठया लाड़ो लाड़ली।

म्हारी लाड़ली को चीर बधज्यो राईवर को बागो बींटली।

बधज्यो बधज्यो ए लाड़ी गोत तुम्हारो एक पिहर दूजो सासरो।

सतवो ता बासो ओवर बसियो ओवर गुड़ घी बस॥

एक चून चावल किणक मैदा बरकत करो ए विनायक।

एक कोथलड़ी जस देईयो बिनायक लाडलै कै बाप ने॥

ब तो खाय खर्चे सो धन बिल सै जस खै परवार मैं।

एक जीभड़ली जस देईयो बिनायक लाडले की माय नै।

बातो मीठीसी बालै नकर चालै जस खै व क ब्वाव में।

एक बांहड़ली बल देईयो बनायक लाडली कै बिरा नै।

एक भार में जस देईयो बिनायक लाठली की भूवाभेण न।

एक गाजत धोरत आये बिनायक सावणियाँ के माह ज्यूं।

एक भरयो भतोलो आवो बिनायक बिणजार के बैल ज्यूं।

एक मांडेय चुणडयो आवो बिनायक सरब सुहागण क शीश ज्यूं।

एक तीन बस्त निभाइयो बिनायक पून पाणी बसुन्दरा।

म तो अली ए गली मत जाईयो बिनायक सिधो ए आयोसामी साल में।

एक आवगी मूगल की बांस सूगन्धी कुण रै सुहागन गणपत पुजिया।

गणपत पुजे लाडल की मांय सुहागण ज्यूँ घर बिड़द उतावली॥

विनायक गीत -

तर्ज - अपने पिया की मैं तो बनी....

चालो गणेश आपां खुरसाणा* क चालां

आच्छा-आच्छा घुड़ला मुलावा ओर राज, म्हारै विरद विनायक।

सुंड-सुंडालो बाबो दुंद-दुंदालो

ओछी सी पिंड कामणगारो ओ राज, म्हारें विरद विनायक।

चालो गणेश आपां बाबाजी क चालां,

जोड़ी, रा जानीड़ा सिणगारा ओ राज म्हारै विरद विनायक।

चालो गणेश आपां सोनी र चालां,

आछा-आछा गहणा घड़ावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो गणेश आपां पुरबियां र चालां,

आछा-आछा पडला मुलावां ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो विनायक आपां कनोई र चालां,

आछा-आछा लाडुडा संधावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चालो विनायक आपां पनवाड़ी र चालां,

आछा-आछा बिड़ला मुलावा ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

चलो गणेश आपां सजना र चालां

जोड़ी री बनड़ी परणीजै ओ राज, म्हारै विरद विनायक।

बालाजी गीत -

सुसरो जी म्हारा थे छो धरम का मायतजी थारी मोटर गाड़ी जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

कांई र कारण भवड़ बोली छ'जात जी,

क्याँ रै खातिर जात पधारिया।

जेठजी म्हारा थे तो धरम का मायत जी,

आदर रा बंटावतजी थारी बैलड़ीया र जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

कांई र कारण....

देवरिया म्हारा थे छो धरम का देवरजी थारी मोटर गाड़ी जुड़ाद्यो

म्हे बालाजी न धोकस्यां।

क्याँ रै कारण भावज बोली छ जात जी

क्याँ रै खातिर जात पधारीया।

मारूजी म्हारा सेजां रा सिणगाराजी भोली बाईजी रा बीराजी

थारी मोटर गाड़ी जाड़ाद्यो म्हे बालाजी न धोकस्यां।

क्याँ रै कारण गौरी बोली छ जात जी

क्याँ रै खातिर बजरंग धोकस्यां।

कंवरा रै कारण म्हे तो बोली छ जात जी

थारे जीवड़े रै कारण बजरंग धोकस्यां।

कहता तो सुणता मारूजी मोटर गाड़ी मंगाया जी

म्हारे हुक्मा रै कारण जात पधारया।

दीन्ही सैला मारू गठ जोड़ेरी जातजी,
कोई रोक रुपयो बालाजी की भेंट न।
दीन्हों बजरंग सरब सुहाग जी,
कोई घीरता न दीन्हों बजरंग गीगलो जी।

पित्तरजी-पित्तराणीजी गीत

उत्तर दिखणस जीवो गांधी को जाआ,
आया पवास्यो शील बड़तळे।
आव गांधी का जीवो बैठ गांधी का,
तोळे गांधी को बेटो किस्तूरी॥
कायेरी डांडी जीवो कायेरो तो,
तोल गांधी का बेटा किस्तूरी॥
सोना री डांडी जीवो रुपारो तोलो,
लूंगारी तोल गांधी किस्तूरी॥
अ कुण मुलावै जीवो ये कुण तुलावै,
साचां पित्तर थारै अंग चढ़ै॥
(श्रीराम) मुलावै जीवो (वासुदेव) तुलावै,
(सांवरमल) पित्तरा थारै अंग चढ़ै॥
छोटी सी तळाई, जाम पाणीड़ो घनेरो,
आयो पित्तरा रो लश्कर न्हायल्यो॥
न्हाया देई-देवता, म्हारा पित्तर सन्तोख्या,
ओजुं तळाई में पाणी अन्त घणो।
छोटी सी बाटकड़ी, जामै केसर घोळी,
आयो पित्तरा रो लश्कर चिरचँ ल्यो।
चिरच्या देई-देवता, म्हारा पित्तर संतोख्या,
ओजुं बाटकड़ी म केसर मोकळी।

पित्तराणीजी गीत

कंठोड़ सुं दल उमड़ा पितराणीजी, कंठोड़ लियोजी मुकाम,
ओ पितराणीजी साचा सायबाणीजी, गैरो जी फूल गुलाब रो।
हिवड़ सुं दल उमड़ा पितराणीजी, नाडे लिया र मुकाम, नाडे
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चंदन चौकी बैठणो, पितराणी दूध पखारा थारै पांव
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चावळ राध्यां थानै उजळा, पितराणी हर्‌या रे मूंगा री धोवा दाल,
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी घी बरतानां थानै टोकणा, पितराणी असल जालापुर री खांड,
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी पुड़ी तो पोवा थानै लड़छड़ी, पितराणी तीवण तीस
बत्तीस ओ पितराणी जी सांचा...।
पितराणी केर करेला थानै स तळा पितराणी पापड़ तळा ओ पचास
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी चन्दन चौकी बैठगा, पितरागी फूलड़ा जड्‌यो बाजोट
ओ पितराणीजी सांचा...।
पितराणी थाळ परोसे थारी कुल बहु जी,
पितराणी कोई नेवर रो झनकर,

ओ पितराणीजी सांचा...।

पितराणी जिम्या जुठया रस भरा, पितराणी अमृत चळु ये कराय

ओ पितराणी जी सांचा...।

पितराणी बेटा तो पोता थानै धोकसी, पितराणी कुल बहुआं रुल लाग थारै

पावै ओ पितराणीजी

सांचा सायबाणी जी, गैरो जी फूल गुलाब रो।

कामाख्या मैया को गीत

कोठे ऐ बाजा बाजीया ऐ।

कामाख्या मैया कोठे गोरया छ निशाण॥

चलो ऐ संईयो आज मैया न धोकस्या।

लग्या ये गुलजार मैया न धोकस्या।

पर्वत बाजा बाजीया ऐ कामाख्या मैया।

गुवाहाटी में गोरया छ निशाण॥ चलो ऐ सईयो...

भोग लाग्या थारे पेड़ा को ए।

कामाख्या मैया और चोटारा नारियल॥ चलो ऐ॥...

दानी तो आवै थाने परण वा ऐ।

कामाख्या मैया करो संकट में साथ॥ चलो ऐ....

थारे भवन में बसे ऐ,

कामाख्या मैया जोगीड़ा धरे थारो ध्यान॥ चलो ऐ...

तीन पहर के बीच में ऐ।

कामाख्या मैया सड़क तीन बनाओ॥ चलो ऐ...

चार पहर के बीच में ए।

कामाख्या मैया बनी कुकड़ो आप॥ चलो ऐ...

जाती तो अव थारे दूर से ऐ।

कामाख्या मैया सांवरिया सिरदार सिरदार॥ चलो ऐ...

जातन आवैथारे कुल बहुआ ए।

कामाख्या मैइया गठ जोड़ारी जात,

कामाख्या मैया गोदज डोल पूत॥

चलो ए....

सगळां देवता को गीत

पांच पताशा पाना का बिड़ला ले विनायक घर जाज्योजी।

पांच पताशा पाना का बिड़ला ले हनुमत घर जाज्योजी।

जिस डाळी पर विनायक बाबो बैठ्या, बा डाळी झुक जाज्योजी।

जिस डाळी पर हनुमानजी बैठ्या, बा डाळी झुक जाज्योजी।

झुक भी जाइयो, रुल भी जाइयो ठंडा झोला देज योजी।

(नोट : इस तरह सभी देवी-देवता का ना नाम लेवें।)

स्वागत गीत

तर्ज- फूल तुम्हे भेजा है खत में

अभिनन्दन करते हैं हम सब, हाथ में रोळी चावल ले,

उर में आनन्द हमारे, श्रीमान आपका स्वागत है।

अभिनन्दन...

आप आये तो फूल खिले हैं,
बगिया में महक रही खुशबू - 2
फूलों का हम हार बनाये
माला से स्वागत करते हैं॥

अभिनन्दन....

गीतों का यह प्रिय उत्सव है,
आप आये खुशियाँ छाई - 2
बेला और गुलाब खिले हैं
धरती पर नवरंग लाये॥

अभिनन्दन....

आप बिना सुनी थी महफिल
आप आये तो बहार आई - 2
आओ बिराजो बैठो आसन
हम सब करते स्वागत है॥

अभिनन्दन...

बधाँवो

मगनी सो हाथी ऊपर अम्बा बाड़ी जी राज
जहाँ जढ़ आल हारी कन्थ हाजरिजी राज
अबरी घड़ी म्हारी बधावो जी राज
सुबरी घड़ी म्हारो रजन घर आयाजी राज
अुबर अुबा कर वा बायण मांग जी राज
बायण दीरावो दशरथ राछावा जी राज
तामा की तोला में भात पसाया जी राज
चढ़ती भवर जी न नुत जी मायाजी राज
कोरी कोरी कुलड़ा मे दही ड़ो जीमायो जी राज
चढ़ता भवर जी सुगन मनायाजी राज
साड़ी क पल्ल दाय हीरा जी राज,
रामचन्द्र लक्ष्मण दोय बिराजी राज,
साड़ी क पल्लु गुड़ धानी जी राज,
सीता दे उर्मीला दे दोर जीठाणी जी राज,
साड़ी र पल्ल दोये राई जी राज
बाई-बाई दानो बदना जी राज,
अबरी घड़ी अमर बइावो जी राज
सुभरी घड़ी म्हार मर बधावोजी राज।

बधावा

पैल बधायो ये सैयो मोरी म्हे गया राज।
गया म्हारा बाबो जीरो पोल
बाबाजी सोस्या ये सैयो मोरी अपनै राज।
म्हाने दीन्यो छै दिखणी चीर
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होय राज।
लाड जंवाई नै सुण भला होया राज।
दुजे बधावे ये सैची मोरी म्हे गया राज
गया म्हारा बीरांजीरी पाल
बीरांजी संतोस्या ये सैयो मोरी आपनै राज।
म्हाने दीन्ये छै चूनड़ी रो बेस
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
लाड जवाई नै ये सुण भला होया राज।
अगणे बधावै ये सैचो मोरी म्हे गया राज
गया म्हारा सुसरां जीरो पोल
सुसरो जी संतोस्या ये सैचो मोरी आपने राज
ल्याया छे दोय रथ जोड़
चढ़ती बाई पै ये सुण भला होया राज।
लाड जवाई न सुण भला होया राज।
चोथ बधावै ये सैयो मोरी म्हे गया राज
गया म्हारे जेठ बड़ांरी पोल

जेठ जो संतोस्या ये सैया मोरी आप न राज
म्हाने दीन्यो छे आधो धन बांट
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
पंचवै बधावै ये सैयों मोरी म्हे गया राज।
गया म्हारैं माखजीरा पोल
मारुजी संतोस्या ये सैयो मोरी आप नै राज।
म्हाने दीन्यो छै सब सुहाग
चढ़ती बाई नै ये सुण भला होया राज।
लाड जंवाई न सुण भला होया राज।

बधावा

सूनो जी भंवर म्हान सुपनो सो आयो जी राज
सुपनो रो अरथ बताओ जी राज
कवो ए गोरी थाने के बिद आयो जीराज
सुपना रो अरथ बतावा जी राज।
हंस सर बर ढोला गाजत देख्या जी राज।
मानसड़ा दोये जल भर राज।
बांगा माला चपल्या म्हे फूलत देख्या जी राज
फूल बीण दोए कामणी राज
पोली माला हंसती म्हे हीसत देख्या जी राज
हरी-हरी दुब घोड़ा चर राज।
आंगनियांरो चोक म्हे पुरत देख्या जी राज
ऊपर कुम कलश धर्यो राज
महला मालो दिवलो म्हे जगतो सो देख्यो जी राज
दीवलां का जोत सवाई जीराज
हंस सर वर गोरी पीर तुम्हारो जी राज
मानसड़ी थारो सासरो राज
बागां माल्या चपल्या व बीर तुम्हारा जी राज
फूल बीण थारी भावजां राज।
पोली माला हंसती देवर जेठ तुम्हारा जी राज
हरि-हरि दूब सवासणी राज।
आंगणियांरो चोक व कंवर तुम्हारा जी राज
कुंभ कलश थारी कुल बहु राज
महलां मालो दिवलो व कंथ तुम्हारो जी राज
दिवलांगरी जोत साएवाणी जी राज।
धन-धन जी (दशरथ) जीरा छावा जी राज
सुपनांरो अरथ भलो दियो राज।
धन-धन जी (रामचन्द्र) जीरा छावा जी राज
सुपनांरो अरथ भलो दियो राज।
धन धन ए साजनियांरी जाई जी राज
बंश बढ़ाओ म्हार बाप को राज।
रूपा की रूड़ी सुहागां की पूरी जी राज
पूत जन म्हारो घर भर राज

बत्तीसी-भात के गीत

गुड़ की भेली लीन्ही छ हाथ, भतीयां न नुतणा निसरी जी।
काका रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली
म्हारै ये बाई दुकाना रो काम, थारा भुवा रो बेटो झालसी जी।
भुवा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।
म्हारै ये बाई मीला रो काम, थारा बाबा रा बेटा झालसी जी।
बाबा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।
म्हारै ये बाई भोत घणेरो काम, थारा मामा रा बेटा झालसी जी।

मामा रा बेटा बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हार ये बाई भोत घणेरो काम, थार माँ का जाया झालसी जी।

माँ का रे जाया बत्तीसी झाल, हम घर बिड़द उतावली जी।

म्हे तो ये बाई ऊबा जोवां बाट, थे घर-घर लिया क्यूं फिर्‌या जी।

कदरो ये बाई मंडियो छ ब्याव, कदरां आवां भातवी जी।

आखा तीजां रा बीरा मंडिया छ ब्याव, थे जद ही आबो भातवी जी।

।। भात ।।

तूं क्यूरै म्हारा हरिया पीपल उन मुणोजी।

येक पान पतूरां बिन सोभ्या नहीं आवै॥

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं।

गजराज ओ भरभात ओ मेरी माका जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यू रे मेरी राम रसोई उण मणी।

एक मूंग भात बिना सोम्या न आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यू रे म्हारा रतन परींडा उनमणा।

एक कुम्भं कलस बिना सोम्या न आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यूं रे म्हारा रामचन्द्र बिरा उनमणा।

एक भात भरयां बिना सौभ्यान आव।

बरस माई जाया इन्द्र ज्यूं॥

तूं क्यूं ए म्हारी थाई उणमणी।

एक भात नुत्यां बिना सोम्या न आवै,

बरस माई जाया इन्द्र ज्युं॥

भात

तूं क्या म्हारा हरिया पीपल उन मुरोजी।

येक पान पतूरां बिन सोभ्या न आवै।

बरस माँ का जायाइन्दर ज्यूँ।

गजराज ओ भरभात ओ मेरी माँ मा जायां इन्दर ज्यूं॥ 1॥

तूं क्यू रै म्हारी राम रसोई उन मुर्णी,

येक मूंग भात बिन सोभ्या न आवै,

बरस माई जाया इन्दर ज्यूं॥ 2॥

तूं क्यों रै म्हारा रतन परींडा उन भुणा,

एक कुम्य कलश बिन सोभ्या न आवै।

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 3॥

तूँ क्यों रै म्हारा (रघुनाथ) बीरा उन मुणो।

एक भात भरयां बिन सोभ्या न आवै।

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 4॥

तूँ क्यों रै म्हारी बाइ न मुणी एक भात

नुत्यां बिन सोभ्या न आवै

बरस माई जाया इन्दर ज्यूँ॥ 5॥

भात

गंगा के छोर रे बीरा जमना के छोरे जमना के छोरे पार बसै मेरा भतई

बेगो सोई और रै मेरी मांका रै जाया जामरा का रै जाय

हम घर बिड़व उतावली

किस विध आऊंए मेरी माकी एक जाई जामण की ए जाई

बीच जमना अथाह भवै।

चनरा कटाऊ रै वीरा नांव धड़ाऊ जै चढ़ आवे मेरा भतई

बेगो सो आई रे मेरी माका है जाया।

किरा विध आऊ ए मेरी माकी ए जाई जामरा की ए जाई

हम घर मण्डी बाई साकड़ी।

राज बुलाऊँ रै बीरा चैजारा बुलाऊँ मण्ड़ी चिणाऊँ मेरे बीर की

बेगो सो आई रे मेरी माका रै जाया।

कण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई

हम घ भैंस दुहावणी

गुजर लगाघूं बीरा हाली लगाघूं भैस दूहाघूं मेरे बीर की

बेगो सो आई रे मेरी माँ का रै जाया

किण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई

हम घर टाबर बाई रोवणा।

दाई रखा धूं रे बीराधाय बुलाधूं कंवर खिलावे मेरे बीर को

बेगो सो आई रे मेरी माका रे जाया

किण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई जामण की ये जाई

हम घर नार कुटे बड़ी।

सास खिनाऊँ रे बिरा नणद खिनाऊं मैं आप ही आऊं

नार समझाऊँ मैरे बीर की

बैगो सो आई रे मेरा माका ई जाया

कीण विध आऊँ ए मेरी माकी ये जाई

हम घर आई बाई हाकमी।

हाकीम हाज्यो रै बीरा घुड़ला पर चढ़ज्यो जै चढ़ आओ मेरा भतई

सिर सुलतानी रै बीरा पाग बिराजै सोई म्हारी (श्रीराम) आइयो

हाथ गुड़ावत बिरा सेल बिराजे सोई (श्री गोपाल) आईयो

इब दल आयो रे बीरा सब दल आयो लोमरा मायड़ मेरी चित रही

इब दल भेजूं ए बार्स सब दल भेजूं घर रखवाली ए बाई मा रही

लोमरा मायड़ मेरी लोम न करिये जायांरो फल ली जीये।

(भात के गीत)

आज म्हारो विरोजी कांकड्या बस रहया,

निरख रहया ग्वालिया, उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।

निरख रही पणिहारी, उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।

ओढ़ु तो हीरा र बीरा झड़ पड़े, मेलु तो तरसे बाई रो जीव

उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।

तालु तो तोला र वीर डोढ़ स, नापु तो हाथ पचास,

उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।

आज म्हारो वीरोजी पोल्या बस रहया,

मिल्या छ देवर-जेठ उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।

आज म्हारो वीरोजी आंगणै बस रह्या,

मिल्या छ बहन र वीर उढ़ाई गणेवा चुंदड़ी।
ओढ़ूं तो हीरा र बीरा झड़ पड़,
ओढ़ु म्हार लाडलड़ी र ब्याव उढ़ाई गणदेवा चुंदड़ी।
(भात के गीत)

चंदा की शोभा चांदनी, बहन की शोभा भैया,
चुंदड़ की शोभा जाल, जिसमें घल रहे मोर पपीहा।
सुसरोजी बरज ए बहू मत नू तो अपना भईया,
सासुजी बरज ए बहू मत नू तो अपना भैया,
तेरी पांच रुपए की भेली जासी, क्या लाएगा तेरा भैया।
सुसराजी की बरजी ना रहूं मैं नूतु मेरा भैया,
पांच मोहर री भेली जासी, लाख मोहर रा मेरा भैया।

(भात का गीत)

एक उजला सा चावल, हल्दी रा पीला,
जां घर जाइये म्हारा भंवरा नुतणा।
एक गांव न जाणूँ, नाम न जाणूँ,
किस घर जाऊँ म्हारा सईयां नुतणा।
अ तो गांव है (दिल्ली), नाम (श्रीरामजी)
जां घर जाईये म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो गद्दी पर बैठ्या (बाबाजी) ओ नुत्या,
राव रसोइया गौरीधण नुतीया।
अ तो गाँव (कलकत्ता) नाम (सीतारामजी)
जां घर जाइए म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो दुकानं म बैठ्या (काकाजी) ओ नुत्या
राव रसोइया गौरीघण नुतीया।
अ तो गाँव (बम्बई) नाम (गोविन्दजी)
जां घर जाइये म्हारा भंवरा नुतणा।
अ तो आफीस में बैठया (जंवाईजी) ओ नुत्या
पीढ़ पर बैठी बाई नुतीया।

गीत बनड़ा और बनड़ी का

नवल बना जयपुर तो ज्याजो जी।
आता तो ल्याजो तारा की चुनड़ी।
नवल बनी किस बिध ल्यावा ओ।
कीसीक रंग की तारा की चुनड़ी
नवल बना हरा-हरा पल्ला ओ
केसरिया रंग की तारा की चुनड़ी
नवल बनी कुणक देखी ओ
कुणजी ल्याया तारा की चुनड़ी
नवल बना भाभी जी क देखी ओ
भाई जी कल्याया तारा की चुनड़ी
नवल बनी ओढ़ दिखा ओ जी
किसीक सोव तारा की चुनड़ी
नवल बना किस विध ओढ़ो ओ
नजर थारी दादी की पुरी
नजर थारी ताई की बुरी
नवल बनी महलो में ओढ़ो जी
बैठ तो निरखा तारा की चुनड़ी

बनी

श्यामल-श्यामल बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के मुखड़े पे चन्दा गगन का जड़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
श्याम-श्याम बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के बालों में सिमटी सावन की धारा
बनी के गालो में छिटकी पुनम की छटा
तीखे-तीखे नयन मीठे-मीठे बयन

बनी के अंगो पे चम्पा का रंग चढ़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
हो यह उमर करम सो बल खा रही है।
बनी की तीरछी नजर तीर बरसाय रहीं है।
नाजुक-नाजुक बदन धीमे-धीमे चलन
बनी के बाकी लटक में है जादू बड़ा
किसी पारस में सोना टकरा गया
बनी को देखकर बना का दिल चकरा गया न
इधर जा सका न ऊधर जा रह गया
देख तो वह खड़ा-खड़ा।
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा
श्याम-श्याम बरन कोमल-कोमल चरण
बनी के मुखड़े पे चन्दा गगन का जड़ा
बड़े मन से विधाता ने बनी को घड़ा

सगाजी-सगीजी

जाण सगीजी का कान जैसे भागलपुर का पान
पान चाब लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी का माथा जैसे सगा जी का छाता
छाता ताण लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगी जी की बोली जैसे सगाजी
जाण सगीजी का दाँत जैसे चाँदी कासा भात
भात जीम लीजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी की पीठ जैसे बम्बई की सी छींट
कुरतो सिमाय लिजो जी म्हारा लाड़ला सगाजी
जाण सगीजी का होठ जैसे आगरे का दाल
मोठ
दाल मोठ का स्वाद लीजो म्हारा लाड़ला
सगाजी
जाण सगीजी का पैट जैसे सगाजी सौ सेठ
सेठ स सौदो कराय लीजीजो म्हारा लाड़ला
सगाजी

नणंद

कठसै आई सूँठ कठे सै आयो जीरो
कढे सैं आयो ये भोली बाई थारो बीरो।
जैपुर सै आई सूँठ दिल्ली सै आयो जीरो,
काशी सै आयो भोली भावज म्हारो बीरो॥
क्या मैं आई सूँठ यो क्या में आयो जीरो
यो क्या मैं आयो ये भोली बाई थारो बोरो।
या ऊँट मैं आई सूठ यो गाडा मैं आयो जीरो
रेला मा आयो ये भोली भावज म्हारो बीरो।
क्या मैं चाये या सूँठ क्या मैं चाये जीरो।
यो क्या मैं चायें य भोली बाई थारो बीरो
या जापा मैं चाये सूँठ यो सागां मैं चाये जीरो
यो सेंजा मैं चाये भोली भावज म्हारो बीरो।
या खिण्ड गई सूंठ यो बिखर गयो जीरो
यो रुस गयो ये भोली भावज म्हारो बीरो।
या चुग लेस्या सूंठ यो पिछोड़ लेस्यां जीरो
मनाय लेस्यां ये भोली नन्दन थारो बीरो।

बहू

म्हारी बहू महल से उतरी
बहू कर सोला सिंगार
आज म्हारी अमली पडलियो॥
म्हार सासूजी पूछ ए बवड

थार गहणारो अरथ बताय॥ आज म्हारी...

सासु गहणा जी गहणा के करे

गहणा म्हारा से परिवा॥ आज म्हारी...

म्हारा सुसराजी गढ़रा राजरी

सासुजी म्हारा रतन भण्डार॥ आज म्हारी...

म्हारा जेठ बाजू बन्द बाँकडा

जीठाणी म्हारी बाजूबन्द री लूंग॥ आज म्हारी....

मेंहदी गीत

नार नवलगढ़ जावो लश्करिया, धण न मेंहदी ल्याज्योजी।

मेंहदी हाळा हाथ भंवरजी घेवर परोसोजी, मेंहदी लाला री।

मेंहदी लाला री ओ सासु सुगणी रा जाया री सैनाणी,

ओ बाईजी रा बीरा री सैनाणी, मेंहदी लाला री।

बीकाणे थे जाओ लश्करिया, घण न टीकी ल्याज्योजी,

टीकी चेप बराबर बैठ्या, टीकी निरखोजी, मेंहदी लाला री।

मेंहदी लाला री ओ...।

दातीड़ा र जाओ लश्करिया, धण न चुड़लो ल्याज्योजी,

चुड़ळै वाळी बांय ए गौरी सिरहाण राखोजी मेंहदी लाला री।

सोनीड़ा र जाओ लश्करिया, धण न बेसर ल्याज योजी,

बेसर हाठो रंग भंवरजी, सदा ही सुरंगोजी, मेंहदी लाला री।

कन्दोई र जाओ लश्करिया, धन न घेवर ल्याज योजी,

मेंहदी हाळा हाथ भंवरजी, घेवर परोसोजी, मेंहदी लाला री।

सोनीड़े र जाओ लश्करिया, धण न पायल ल्याज्योजी,

पायल बाजना पांव गौरी ए ठमक सुं मेलो ए,

मेंहदी लाला री।

मेंहदी गीत

झटकण मेंहदी पटकण पान,

मेंहदी गई हे राज दिवान।

थे सुरजजी मेंहदी ल्यो,

मेंहदी ले रेणादेन द्यो।

थे गजानन्दजी मेंहदी ल्यो,

साग साग गोरी न द्यो,

ब्याज बटो नणदल बाई न द्यो।

म्हे तो आला लीला बांस बढ़ायस्यां रुड़ी बायनर कोड्चा, बाजी रे मादळ रंग रयो।

चित चाखो रे चावळिया थारो रे शबद सुबावणो।

म्हे तो रूठा जी गोत मनायस्यां रुड़ी बिड़द्या रा कोड्या, बाजी रे मादळ रंग...

म्हें तो सूत्यो जी सायबो जगायस्यां, म्हारी कुखां र कोड्या, बाजी रे....

म्हे तो काचो जी दहिड़ो बिलोयस्यां, म्हारै

माखण र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो छोटासा कंवर परणायस्यां, म्हारी बह्वां र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो छोटी सी धिवड्यां परणायस्यां, म्हार जवायां र कोड्या, बाजी रे...

म्हे तो पीळो रंगायो मोती चूर रो, म्हे तो चुड़लो चिरावां हंसती दांत रो

म्हारै सायब रो कोड्या, बाजी रके मादळ रंग भर्‌यो, चित चोखो...

म्हेतो लाडू संधावां सठवा सूंठ रा, म्हारी कूखां र कोड्या, बाजी के मादळ रं भर्‌यो,

चित चाखो रे चावळिया थारो रे शबद सुहावणो।

हल्दी

म्हारी हलदीरो रंग सुरंग
निपजै मालवा॥
आ लागे बनडी रा दादोसा
दादस्या रा मन रवै
वो लाग्ये बनडीरा बाबोसा
मा या र मन रवै॥
बाँकी दादया मा य
चतर सुजान केसर केवटे
वो लग बनडीरा काकोसा
काक्या रा मन रै व
वो लाग बनडीरा मामोसा
माम्यार मन रै व
बांकी काक्या माम्या चतर सुजान
केसर केवटे

हल्दी हाथ-1

ऊखल डोरो मूसल डोरो, डोरो सात सुहागण्यां।
एक ऊखल डोरो, डोरो सात सुहागण्यां।

धान सोवण का गीत

धानै सोवै धान सोवै धाना रो फटको
गेहूं सोवै गेंहू सोवै गेंवा रो फटको
दशरथजी री कुल बहू धानज सोवै
जनकजी री धीवड़ धानज सोवै
जनकजी री धीवड़ धानज सोवै
श्री रामजी गोरी धानज सोवै
वनड़ो म्हारो अंखीय जरावण होयसी
वनड़ी म्हारी सरब सुहागण होयसी
मूंग सोवै मूंग सोवै मूंगा रो फटको
चावल सोवै चावल सोवै चावला रो फटको
लूण सोवै लूण सोवै लूणा रो फटको

इसी तरह सात ध्यान तथा धान सोणे वालों का नाम लेते हैं

पीठी का गीत

म्हारी हल्दी रो रंग सुरंग निपजै मालवा,
मुलाव लाड़लड़ी रा दादाजी, दादीजी र मन रल।
बांकी दादीजी र मन कोड, कोड घणा करै,
बनड़ी पीठड़ली दिन चार मुलमुल मसलल्यो,
बनड़ी काजलियो दिन चार, नैण घुलायज्यो,
बनड़ी मेंहदड़ली दिन चार, हाथ रचायल्यो,
बनड़ी चावलिया दिन चार, रुच रुच जीमल्यो,
बनड़ी न्हाय-धोय बैठी बाजोट, सदा ए सवावणी।

लाड़ली कांई मांगै गलहार, काई दांत्यो चुड़लो।
म्हे तो मांगु साजनीया रा जोध, ब म्हारै सींग चढ़ै।
वनड़ो न्हाय धोय बैठयो बाजोट, सदा ए सवावणी।
लाडला कांई मांगा सिर पाग, कांई सिर रो सेवरो
म्हे तो भल मांगु सिर पाग, भल सिर रो सेवरो
बनड़ा तोरण तारा री छांव, क्यू कर बांधस्यो
म्हारा सिमरथ दादाजी साथ, भल भल बांधस्यो
म्हारा गेणां रो डब्बो जी हाथ, भल भल निरखस्यां
बनड़ा सासु है इदक स्वरूप, क्यूं कर भेंटस्यो
म्हारी सासु न सात सलाम, भल भल भेंटस्या

उबटणो

गेहुं र चणा रो उबट्णो, माय चमेली रो तेल,
राईजादो बैठयो उबटणों।
आवो म्हारा दादाजी निरख्ल्यो,
आवो म्हारा बाबजी निरखल्यो,
थां निरख्या सुख होय, राईजादो बैठ्यो उबटणो।

तेल

सुण-सुण ओ जोधाणा रा तेली,
घाणी पीड़ो केसर माय किस्तुरी,
माय घालो मरुवो माय जावित्री,
ओ तेल लाड़लड़ा र अंग चढ़सी,
दमड़ा बाँरा दादाजी कर लेसी।

तेल

तेली ये तेलण तोलो, राई चम्पा के रेलो,
(दशरथजी) घर कुलबहु, बहु (श्रीरामजी) तेल चढ़ाइयो।

काजल

काजल रो करवो भरयो
सूरमेरी लागी रे कटार
गोरी रो काजलीयो॥
पालर माटी चिकनी
चुल्या घाल्या दोयर चार
गोरी को काजनीयो॥
गोरी गोरी हथल्या मांड द्यो
काजलीया रा उपडाला कोर
गोरी रे काजलीयो॥
दोराण्या जीठाण्या रल सारेला
नणद भोजाया रल सारेला
काजलीया रा करेला बखान
गोरी रो काजलीयो॥

चुड़ो

आज नगर के बाजार में म्हारी मन हट माड़ीछै हाट
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
छज्जां तो बैठी छरा को मन गयो म्हारो मनहट उरै तो बुलाय,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कैरे टकांरो थारो चुड़लो जी बो कैरे टकाँ गज भाँत,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
यो कुण चुड़लाँरो गाय की जी जो कुण खरचगो दाम,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥

श्रीराम चुड़लाँरो गाय की जी वो खरचगो दाम
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
बीच में कै (सीताराम) ले गयो म्हारी साई धण जायो छ पुत
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कहो ना पंडित जी सायाँ म्हारै चुड़लाँरो बार दिखाय
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
आठै तो नोमी चर्तुदशी थे तो पैरो ना बार दीतवार,
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥
कहो ना नणद सवाँसणी म्हारै चुड़ालारै राखी बान्ध
राजी ड़ा लाल चुड़ो पहराय॥

कांगना बान्ध

कांगनो कांगनो सोनी क धड़ियो कांगनो
पटव क जड़ीयो कांगनो।
कांगनो तेरी भुवाबाई बान्धो कांगनो।
तेरी भैणड़ बान्ध्यो कांगनो
मोत्यां की लड़ झड़ कांगनो
हीरा की लड़ झड़ कांगनो।

सेवरा

ऊँची तो चोवटो मालीको सोवै ये नचीत
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
म्हारी मालन जाय जगाइयो माली तूँ क्यो सोवै ये नचीत,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
नगरी कँवारा परणसी आछा सेवरा गून्थ
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
सोनो तो लाग्यो सोवणो रूपो तो अजलदंत
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
मोती तो लाग्या बाटला हर लाल लगी लखचार
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
उड़ती तो लागी चिड़कली गढ़ लगी लखचार,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
पंखो तो लाग्योखिजूर को हर पार अठारा टंक,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
कागज लाग्यो मुड़ा हर रंग लाग्यो ये सुरंग
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
हरख्यां रा गोरा आच्छा लाडा सेवरा लाग्यो है भोत विनांण
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
सिर घर मालण निसरी हर भर हरवारवां र मांय
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।।
लोग महाजन बूझियो हर तूं मालण किया जाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
म्हारै(सीताराम) का है सेवरा म्हें तो घर दशरथजी कै जाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
पूत सपूती आगंण बहु दुर्गा लियोये बुलाय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
ल्याय धरंया धर्मसाल मैं म्हारी साल पवासा लेय,
लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥
हर थारै गोरै इच्छा लाडा सेवराहर चार जणी

रखवाल

लाडलरंग बनड़ारा सेवरा॥

दादीतो भूवा मांवसी तेरी जणोयो सहोदया माय,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

हर थारै गारै आच्छा लाडा सेवरा अडिया तो च्यारूं राव,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा।

दिल्ली को अड़ियो बादश्या जैपर को जगत सिंह राव

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

बून्दी को बुद्धसिंह अड़ रयो सीकर को यो माधोसिंह राव,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

च्यांरू तो जुहारिया अड़िया है सागला भाँड

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

साजन को यो (श्रीगोपाल) अड़रयो भाँड

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

इन भाँड़ा को नेग चुकाय

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

थोथा चना एक पवाली इन भांड़ाको यो ही उनमान,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

सवासणियांनै पौमाचा धन भांड़ानै कूला एक घाण,

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

सवासर्णियांनै राखल्यों इन भांड़ने सीख दिवाय

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

संगला तो भांड़ जुहारिया मस्तक बान्ध्यो है दीना नाथ के नन्द

लाडल रंग बनड़ारा सेवरा॥

चूनड़ी

आज म्हारा बीरोजी कांकड़ बस रह्या हरख्या छै ग्याल्याजी लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माको जायो बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी॥

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पढ़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी बागा बस रह्या हरख्या छै मालीजी लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पढ़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी सहरां बस रह्या हरख्या छै म्हाजण लोग।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओढूंतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी पोल्यां बस रह्या हरख्या छै देवर जैव।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओंढूतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई

रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आज म्हारा बिरोजी चौक्यां बस रह्या हरखी छै माँकी जाई भैण।

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

आयो छै माँको जाये बीर हीरां जड़ ल्यायो चूनड़ी।

ओंढूतो हीरा झड़ झड़ पड़ मैलूँ तो तरसे बाई रो जीव॥

उढ़ाई घण देवा चूनड़ी।

चुनड़ी गीत

राताँ फूलाँ रिंगणी, कोई धोळाजी जायल रा फूल,

रातडल्या रँग चून्दड़ी।

घर जाया सुरजजी पूछ, घर आया गजानन्दजी पूछ,

घर आया देवी-देवता पूछ,

गोरी ए तन भालो कूण रातड़ल्या रँग चून्दड़ी-

बाल पण म्हारी माता प्यारी पूछजी जनमरा बापर-

रातड़ल्या रँग चून्दड़ी।

वर जोड़ी केशरियो प्यारो कड्या जी झडूलो पूत-

रातड़ल्या रँग चून्दड़ी।

तोरण

कांकड़ आयो राईबर थर-हर कांप्यों राज,

बूझो सिरदार बनी न कुण कामण गारा ओ राज।

म्हे नहीं जणां म्हारा ग्वाल्या कामण गारा ओ राज।

ग्वाल्या रो नेग चुकास्यां कामण ढीला छोड़ो राज।

छोड्या न छूटै राईबर जोर घुल्या छ राज।

बागां में आयो राईबर, थर हर कांप्यों राज,

बूझो सिरदार बनी न कुण कामण गारा ओ राज।

म्हें नहीं जाणां म्हारा माली कामण गारा ओ राज।

माली को नेग चुकास्यां कामण ढीला छोड़ो ओ राज।

छोड्या न छुटै राईबर गैरा घुल्या छ राज।

घोड़ी

बागा में घोड़ी ब्याही ओजी बनड़ा जी

थारा दादो जी मुलाई थारा ताऊजी मुलाई गिरवर धारी कृष्णा मुरारी

राधा रूकमण प्यारी लाग हर प्यारी

बागां में घोड़ी ब्याही ओजी बनड़ा जी

थारो बापु जी मुलाई थारो चाचो जी मोल मुलाई ओजी बनड़ा जी

गिरवर धारी कृष्णा मुरारी राधा रुकमण नारी लाग हर न प्यारी

बागो मे बनड़ी ब्याहि ओजी बनड़ा जी

थारा बिराजी मुलाई थारा मामा जी मुलाई ओजी बनड़ा जी

गीर वर धारी कृष्णा मुरारी राधा रुकमण नारी लगा हर न प्यारी

थारा फुफा जी मुलाई थारा जीजाजी मुलाई ओजी बनड़ा जी

गीरवर धारी कृष्ण मुरारी राधा रुकमण नारी लाग हर न प्यारी।

थाम

खाती को बन खंड़ निसरो कांदे धरी कुआड़
माडलड़ो (श्रीराम) को श्रीराम मड़े यह वाड़ीयो
सुरज बाबो दि नड़ी डोर।
महादेव जी मड़ पढ़ वाड़ीयो इसरदास दिनड़ी डोर
बिन याक बाबो दि नड़ी डोर॥

थाम

खाती को वन खंड निसरो कांधे धरी कुंहाड़,
माडलड़ो (श्रीराम) को श्रीराम मड़ यह बाड़ीयो,
सूरज बाबा दिन्ही नड़ी डोर।
महादेवजी मड़ पढ़ बाड़ीयो, इसरदास दीनड़ी डोर,
विनायक बाबो दीन्ही नाड़ी डोर।

चाक

ऊँच खेड़ ए बसे ए कुम्हारी नीच बसे ये कुम्हार,
ये राय जादी ये कुम्हारी।
मांथाने मैमद हद बनो कुम्हारी रखड़ी को सर्व सुहाग,
ये राय जादी ये कुम्हारी।
गले नै हारज हद बनो कुम्हारी थारी चुड़लारो सर्वसुहाग
ये राय जादी ये कुम्हारी।
पगल्यानै पायल हद बनो कुम्हारी थार बिछीया रो पड़ी समझोल
ये राय जादी ये कुम्हारी।
कड़ी यानै दानव हद बनो कुम्हारी थार पील को सर्व सुहाग
ये राय जादी ये कुम्हारी।
मैं तो न्यारो लूं न्यारो खिड़की पर रै दोय म्हारा भावरीया।
मैं तो रोटू लूं रोटी कोटी मैं रे दोय म्हारा भावरीया।
जाय म्हारा भावरीया।
मैं तो बीनणी लूं बिनणी (कन्हैयालाल) के रै बीनणी बाबो कै रै दाय म्हारा भावरीया।

(चाक)

ऊँच खेड़ बस ए कुम्हारी, नीच बस ए कुम्हार
ये रायजादी ये कुम्हारी।
मांथा न मैंमद हद बनो कुम्हारी।
गलै न हारज हद बनो कुम्हारी थारे चुड़ला रों सर्वसुहाग,
ये रायजादी ये कुम्हारी।
पगल्यांन पायल हद बनो कुम्हारी थारी बिछिया रो पड़ो रमझोल,
ये रायजादी ये कुम्हारी।
कड़ियां न दावण हद बनी कुम्हारी थारे पीलेको सर्व सुहाग,
यो राजजादी ये कुम्हारी।
मैं तो न्याणों लूं न्याणों खिड़की पर रे, दोय म्हारा भावरिया,
मैं तो रोटी लूं रोटी कोटी मैं रे, दोय म्हारा भावरिया।
मैं स्याणी लूं स्याणी (श्री गोपालजी) क जी,
जाय म्हारा भावरिया,

मैं तो बीणी लूं बीनणी (श्रीगोपालजी) क रे,
बीनणी बाबाजी क रे, दाय म्हारा भावरिया।

झोल

पहल मंगल सोम धई ए नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।
अच्छा आड़ा तेरा बाबोजी झोल धलाईया मेवा बरसन लाग्या।
अच्छा लाड़ा तेरी मायेड़ मसल नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।
घर चंदोवा छाईया तमोलड़ राच्या मेवाबरसन लाग्या।
दूजंड़ मंगल सोम नी नूहाईया मेवा बरसन लाग्या।
दाखरिया मन भाईया तमोलड़ राच्या मेवा बरसन लाग्या।

फेरों का गीत

पेलै तो फेरा लाडली दादाजी न प्यारी।
दूजै तो फेरा लाडली बाबाजी न प्यारी।
दूजै तो फेरा डाली जामीजी न प्यारी।
अगुआं तो फेरा लाडली काकाजी न प्यारी।
अगआं तो फेरा लाडली बीराजी न प्यारी।
अगुआं तो फेरा लाडली बीराजी न प्यारी।
चौथे तो फेरा लाडली होयी परायी॥

फेरों का गीत

धीमी धीमी चाल म्हारी रतन कंवरी,
रतन कंवरी म्हारी राजदुलारी।
पेलै तो फेरा बनड़ी दादाजी री पोती,
दूजै तो फेरा लाडली बाबाजी री बेटी।
दादाजी री पोती बनड़ी दादी जी री प्यारी।

आरतो

कूं कूं गार धुलाओ जी लीयो घण आँगणो।
मोत्या चौक पुरा ओ जी सिंधासन बैठगी॥
जहाँ लाडे लड़ो बढ़ाओ जी भुवाकर आखो।
मैं तो कर ये न जानू ये आरती लाड़ेलड़ारो आरती॥

सीढना

पानी गहरा सोना है आज राते के साढ़े बारह बजे बरातियों की लूटी लिलाम हो रही है।
जो किसी व्यक्ति को लेना हो सड़क पर आकर
हाजिर हो जाये एक टका दो टका साढ़े तीन टका।

पहरावाणी

थान माला पुवाय द्या जी सगाजी राम भजो,
हर लाडु की हर पेड़ा की हर बीच-बीच सांख जलेबी की,
गटकाय मती जाज्योजी माला मीठी छ।
माल लेर सिहराजा सुत्या सपनो आयो भूता को र पलीता को,
हर डाकण को, हर स्याली को,
थे डर मत जाज्यो जी माला सांची छ।
थान माला पुवाय द्या जी सगाजी माला जपो।

बिदाई गीत

जी मेहं थान बुझां म्हारी कंवर बाई ए,
म्हें थान बुझां म्हारी चतर बाई ए
इतरो दादाजी रो हेत, छोड़ र बाई सीध चाली ए।
इतरो बाबजी रो हेत, छोड़ र बाई सीध चाली ए।
आयो सगा रो सुवतो जी,
लेन्यो तोली म सुं टाल, कोयलड़ी अध मोलीए।
आयो सगा रो सुबटो जी,
लेम्यो लाडो न परणाय, कोयलड़ी अध भोली ए।

विदाई गीत

म्हार आंगण चिरमटड़ी से रुख म्हारा पिवजी
कोई समधी र आंगण केवड़ोजी।
फूल्यो फूल्यो चिरमठड़ी रो रुख म्हारा पिवजी
कोई महकण लान्यो केवड़ोजी।
दोनुं समधी बैठ्या जाजम ढाल म्हार पिवजी
कोई चौपड़ पासा ढलियाजी।
खेल्या खेल्या सारोड़ी रात म्हार पिवजी,
कोई चौपड़ पासा दालियाजी।
पूछे पूछे राजकंवर री माय म्हारा पिपवजी,
कोई कुण हार्‌या राजकंवर रा बाप धण गौरी
कोई कोटल समधी जीतियाजी।
हंसन्या मायला हसती क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,
म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।
हंसती देस्यां राजकंवर री दात धण गौरी
कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।
घुड़ला मायला घुड़ला क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,
म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।
घुड़ला देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,
कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।
बुगचा मायला कपड़ा क्यूं हारियाजी।
कपड़ो देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी
कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।
डब्बा मायलो महणो क्यूं न हार्‌या म्हारा पिवजी,
म्हारी राजकंवर क्यूं हारियाजी।
महाणां देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,
कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।
राजकंवर क्यूं हारियाजी।
महणां देस्यां राजकंवर री दात घण गौरी,
कोई ज्यूं घर सोहे आपणोजी।
राजकंवर है मोत्यां बिचली लाल म्हारा पिवजी,
कोई आंगण सोवे लाडलीजी।
पायो-पायो काचो तो दूध म्हारा पिवजी,
कोई मांय पताशा घोलणाजी।
उठ म्हारी बाई पहर पटोलो, कर गठजोड़ो
थांर बाबुजी वचनां हारियाजी।
कोट तल कर म्हारी बाई जावे पिवजी,
म्हारी कायर जीवड़ो होय रहुयोजी।
तुं म्हारा जीवड़ा कायर मतना हो म्हारा जीवड़ा
कोई आ ही सकल म होय रही जी।

विभिन्न गीत

घुँघटीयो

बनडी थार घुंघटीय र कारन
कजली देशा रा हस्ती लाया..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो मोत्या जडयो॥
बनड़ी हीरा ये जडयो मोत्यां जडयो

थार घुँघटीयो म चाँद छुपस्या..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
बनड़ी थार घुँघटीय र कारन
लंका पारा रा सोनो ल्याया..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
दरिया पारां रा हीरा मोती....म्हारी रजवण
घुँघटीयो मोत्या जडयो॥
बनडी हीरा ये जडयो मोत्यां जडयो
थार घुंघटीयो म सोला सूरज उग्या..... म्हारी रजवण
घुँघटीयो मोत्यां जडयो
बनडी थार घुँघटीय र कारन
दूरां देशा रा चाल्या आया.....म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
बनडी थार घुँघटीय र कारन
अपणी जोडी रा जानी ल्याया.... म्हारी रजवण
घुँघटीयो हीरा जडयो॥
चतरशाल बैठी बनड़ी पान चाब
कर ये बाबोसा स बिनती
बाबोसा देश देता परदेश दिज्यो
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
कालो मत हेरो बाबोसा
कुल न लजाव
गरो मत हेरो बाबोसा
अंग पसीज
म्हारी जोड़ी रो बर हेरज्यो॥
लामोमत हेरो बाबोसा
साँगड छूट
ओछो मत हेरो बाबोसा
गीगलो बताव
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
ऐसे बर हेरो बाबोसा
काशी रो बासी
बाईर मन भासी बाबोसा
हस्ती चढ आसी
म्हारी जोडी रो बर हेरज्यो॥
म्हे नहीं देख्यों म्हारी दादीसा नहीं देख्यो
दादीसा कैव बर हैं साँवलो
हँस खेल ये बाबोसारी प्यारी बनडी
हेरो छ फूल गुलाब रो॥

चिडकली

मैं तो बाबुल रे बागा की चिडकली
परदेशी सुवटीय र लार
बाबुल गँठ जोडो करयो॥
दादाजी खूब रूखाली म्हारी कोटरिया
दादीजी खूब खिलाया म्हान गोद
बाबुल गठ जोडो करयो॥
मैं तो संगरी सहेल्या रल खेलती
बीरोजी घणी तो पूजाई गणगौर
बाबुल गठ जोडो करयो॥
मैं तो मामे एक कंधोल्ये ले घुमती
मामीजी सुलझाया उलझेडा केश
बाबुल गठजोडो करयो॥
भावज खूब रचाई हाथा राचणी
भुवाजी घणां तो लडाया म्हारा लाड
बाबुल गठ जोडो करयो॥

बाबुल छोड चली थारो आँगणियों
मायड छोड चली थारो चूण
बाबुल गठजोडो करयो॥
बीरा नित ही जोऊँली थारी बाटलडी
लेवण आई रे सावणीय री तीज
बाबुल गठ जोडो करयो॥

चिरमटडी

म्हार आँगण चिरमटडी रो
रुप म्हार पीवजी
कोई समधीर आँगण केवडो जी
फूल्यो फूल्यो चिरमटड़ी रो
रुप म्हारा पीवजी
कोई अबकरणा रो केवडो जी॥
दोन्यूँ समधी बैठया जाजम बिछाय
म्हारा पीवजी कोई चोपड पासा घालीया जी।
बूझ बूझ राजकँवर रा बाबो घणघोरी
कोई पोडण समधी जीतीया जी।
म्हारी लाडो मोत्यां बीचली लाल
म्हारा पीवजी तोला बाई रा हँसती क्यूना हारया
म्हारा पीवजी म्हारी राजकँवर क्यूँ हारिया जी
पहली हारया तीन भवन नाथ घणघोरी
दूज हारया थान थारा बाबो घण घोरी
कोई पीछ म्हे भी हारिया जी।
उठ म्हारी बाई कर सोला सिणगार म्हारी कँवरी
पहर पटोलो ओढ़ दूरंगो जावो म्हारी कँवरी
थार बाबोजी बचन हारिया जी॥
घर सुनो कर चाली म्हारी बनड़ी
जीवडो ऊजल
रोयरोय जीवडा कायर मत ना
होया म्हारा मनडा
कोई आय सकलम रीत है।

आमली

जी आम्बा पाक्याना दोय आम्बली
जी पाक्यों आमलडा रो रुप
कोयल बाई सीद चाल्या।
जी माऊसा लहरा लेय
लाडल बाई सीद चाल्या॥
जी छोड दादोसारी आँगली
जी छोड दादीसारो हेत
कोयल बाई सिद चाल्या॥
जी म्हे थान पूछा म्हारी कँवर बाई
जी छोड सहेल्यां रो साथ
सोनल बाई सिद चाल्या॥
जी आयो सगारो सुवटे
जी ले गयो डोली म उठाय
कोयलडी अद बोली॥
जी रमती बाबोसार आँगण
जी छोड भाई बहनारो साथ
सुगन बाई सिद चाल्या॥

ओल्यूँ

ऊँची तो खीव ढोला बिजली
नीची को खीव खेनी वाली जी ढोला॥

ओजीवो गोरी रा लशकरीया
घडी दोय लशकर थामोजी ढोला
पलक दोय लशकर थामोजी ढोला॥
म्हारो तो थाम्यो लशकर नाथम
थार बाबासारो थाम्यो लशकर
थमसी ए गोरी॥
चढ़ो ये तो ओढ़ा चुनडी
रवौ ये तो दिखणी रो चीर जी ढोलां
नीरख चढांगा गोरी क चूनडी
आय नीरखाला दिखणी रो चीर ए गोरी
चढो ये चढावो ढोला के करो
क्यूँ तरसावो म्हारो जीव जी ढोला
थारी तो ओल्यू ढोला म्हे करा
म्हारी तो करे ना कोय जी ढोला॥
म्हारी तो ओल्यू गोरी थे करो
थारी तो करसी थारी माय जी गोरी॥

कामण

बन्ना बागा आय बिराज्याजी
रस कामणीया,
म्हारो माली बीन्द सरायोजी
रस कामणीया।
चालता की चाल बान्धू
देखता की नैन का बान्धू
घोड़ी चढ़ायो बीन्द वान्धू।
बीन्द को बड बीन्द बान्धू
बान्धू थारो कुटुम कबीलो ये
रस कामणीया॥
बन्ना शहरा आय बिराजाजी
रस कामणीया।
बन्ना तोरण आय बिराज्यारी
रस कामणीया।
म्हारा सगला बीन्द सरायोजी
रस कामणीया।
बन्ना फेरा आय बिराज्या जी
रस कामणीया।
म्हारा जोशी बिन्द सरायोजी
रस कामणीया।

चंवरी

तू चंवरी क्यू डगमगी थारा आला गीला बांसजी।
तू क्यूं डरपे लाडली थारा दादाजी बैठ्या पास जी।
तू क्यूं डरपे लाडली थारा बाबाजी बैठ्या पासजी।
डरपे नाचण रो लाडलो बांकै कोई ये न आयो साथजी।
डरपे हरमल रो लाडलो बां कै कोई ये न आयो साथजी।

कन्यादान

बाई रा बाबाजी कर कन्यादान, बडीयाणी बाई रा अरज कर,
बाई रा बापुजी देव कन्यादान, मायड़ बाई री अरज कर,
मती देवो जी कन्यादान, बाई म्हारी दो दिन री
मती बरजो ए घर री नार, आ रीत ह सार जग री,
बाई न राख जीयां ही रह जाय बेटी बाबुल री।
बाई न भेज जठ ही उड़ जाय, चिड़ीया बागां री।

बाई न बान्ध जठ ही बन्ध जाय, गइयाँ खुंटे री।
बाई रा काकाजी...।

बिड़ला

आमोल्या तो छाई सुख सेज, ऊपर छायो नीमड़ो जी।
ज्याँ चढ़ बेठ्या श्री राम तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।
आमोल्या तो छाई सुख से ऊपर छायो निमड़ो जी।
ज्यां चढ़ बेठ्यो लक्ष्मण बीर, तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।

फल सड़ो

म्हारा फलसड़ो कुणकुण काईया जी
म्हार बाबा जीरा (रमेश कुमार) आईया जी।
म्हार असरयो सारण आईया जी
म्हे तो उबड़ला जोव छा बाटड़ी जी

बिड़ला

आमोल्या तो छाई सुख सेज, ऊपर छायो नीमड़ो जी।
ज्याँ चढ़ बेठ्या श्री राम तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।
आमोल्या तो छाई सुख से ऊपर छायो निमड़ो जी।
ज्यां चढ़ बेठ्यो लक्ष्मण बीर, तिलक थार कुण क्यों जी।
म्हार छ सुधरा बेन तिलक म्हार बे क्यों जी।
बीरा थारो तिलक लीलाड़ फूला हन्दो सेवरो जी।